ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

मानव मूल्य स्थापित करने में सापित्यकार ों की भ ूपमक ा (पवश ेषकर प्र ेमचद और नागार ्न के सबध म ें)

Vijendra Prasad Meena

Lecturer, Dept. of Hindi, Government College Karauli, Rajasthan, India

सार

न ाग ार ्जुन (30र ून 1911 5 नवम्बर 1998) हिन्द ी और म ैहिल ी के अप्रहिम ल ेखक और कहव ि े। अन ेक भाष ाओ ं के ज्ञ ाि ा ि ि ा प्रगहिशील हवच ारध ार ा के स ाहि त्यक ार न ाग ार ्जुन न े हिन्द ी के अहिरिक्त म ैहिल ी स ंस्कृ ि एव ं ब ाङ् ल ा म ें म ौहलक रचन ाए ँ भ ी क ी ं ि ि ा स ंस्कृ ि, म ैहि ल ी एव ं ब ाङ् ल ा स े अनव ाद क ार ्य भ ी हकर ्। स ाहि त्य अक ादम ी परस्क ार स े सम्म ाहन ि न ाग ार ्जुन न े म ैहिल ी म ें र ात्री उपन ाम स े हलख ा ि ि ा र् ि उपन ाम उनक े म ूल न ाम व ैद्यन ाि हमश्र के स ाि हमलकर एकम ेक ि ो गर् ा। धनपि र ार् श्र ीव ास्तव (31 र ुलाई 1880 – 8 अक्ट ू बर 1936) र् ो प्र ेमच ंद न ाम स े र ान े र ाि े ि ैं, व ो हिन्द ी और उद ू के सव ाुहधक ल ोकहप्रर् उपन्य ासक ार, कि ान ीक ार एव ं हवच ारक ि े। उन्ह ोंन े स ेव ासदन, प्रेम ाश्रम, र ंगभहम, हनमल ा, गबन, कमभहम, ग ोदान आहद लगभग डढ़ े दर्जन उपन्य ास ि ि ा कफन, पस की र ाि, प ंच परम ेश्वर, बड े घर क ी ब ेटी, ब ूढ़ ी क ाक ी, द ो ब ैल ों क ी कि ा आहद ि ीन स ौ स े अहधक कि ाहनर् ाँ हलख ी। उनम ें स े अहधक ांश हिन्द ी ि ि ा उद ू द ोन ों भ ाष ाओ ं म ें प्रक ाहशि हुई ं। उन्ह ोंन े अपन े द ौर क ी सभ ी प्रमख उद ू और हिन्द ी पहत्रक ाओ ं र ्म ान ा, सरस्वि ी, म ाधर ी, मर् ाद ा, च ाँद, सध ा आहद म ें हलख ा। उन्ह ोंन े हिन्द ी सम ाच ार पत्र र् ाग रण ि ि ा स ाहहत्यक पहत्रक ा ि ंस क ा सप ादन और प्रक ाशन भ ी हकर ्। इसक े हलए उन्ह ोंन े सरस्वि ी प्रेस खर ीद ा र् ो ब ाद म ें घ ाट े म ें र ि ा और बन्द करन ा पडा। प्रमचंद े हफल्म ों क ी पटकि ा हलखन े मबई आए और लगभग ि ीन वष ि क र ि े। र ्ीवन के अ ंहिम हदन ों ि क व े स ाहित्य स ृर ्न म ें लग े र ि े। म ि ार ्न ी सभ्यि ा उनक ा अ ंहिम हनबन्ध, स ाहि त्य क ा उद्द ेश्य अंहिम व्य ाख्य ान, कफन अंहिम कि ान ी, ग ोद ान अंहिम प ूण उपन्य ास ि ि ा म ंगलस ूत्र अ ंहिम अप ूण उपन्य ास म ान ा र ्ा ि ा ि ै।

1906 स े 1936 के ब ीच हलख ा गर् ा प्र ेमच ंद क ा स ाहि त्य इन ि ीस वष ों क ा स ाम ाहर ्क स ांस्कृ हिक दस्त ाव ेर् ि ै। इसम ें उस द ौर के सम ार ्सध ार आन्द ोलन ों, स्व ाध ीनि ा स ंग्र ाम ि ि ा प्रगहिव ाद ी आन्द ोलन ों के स ाम ाहर ्क प्रभ ाव ों क ा स्पष्ट हचत्रण ि ै। उनम ें द ि ेर ्, अनम ेल हवव ाि, पर ाध ीनि ा, लग ान, छ ू आछ ू ि, र ाहि भ ेद, हवधव ा हवव ाि, आधहनकि ा, स्त्र ी-पर ुष सम ानि ा, आहद उस द ौर क ी सभ ी प्रमख

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

समस्याओं का हचत्रण हमलताा ताै। आदशोन्मख र्थाार्थावाद उनके साहहत्य की मख्य हवशेषताा ताै। हिन्दी कताानी ताथाा उपन्यास के क्षेत्र में 1918 से 1936 तक के कालखण्ड को 'प्रेमचंद र्ग' र्ा 'प्रेमचन्द र्ग' किा र्ााताा ताै।

परिचय

नागार्जुन का असली नाम वैद्यनाथ हमश्र थाा परंत े नागार्न ताथाा मैहथली में काशी थ हिन्दी साहहत्य में उनोन र्ात्री उपनाम से रचनाएँ की। में े 'वैदेह' उपनाम से भी सन् 1936 में हसंताल में 'हवद्यालंकार पररवेण' में रताते कहवताएँ हलखी थी। थी 'नागार्जुन' नाम ग्रताण हुए उनोन हकर्ा।आरंभ में उनकी हिन्दी कहवताएँ भी 'र्ात्री' के नाम से ती छपी थी। वस्ततः कछ हमत्रों के आग्रत पर १९४१ ईस्वी के बाद उनोने हिन्दी में नागार्जुन के अलावा हकसी नाम से न हलखने का हनणर् हलर्ा थाा।नागार्न की पतली प्रकाहशत रचना एक मैहथली कहवताा थी र्ो १९२९ ई० में लताेररर्ासरार्, दरभंगा से प्रकाहशत 'हमहथला' नामक पहत्रका में छपी थी। उनकी पतली हिन्दी रचना 'राम के प्रहत' नामक कहवताा थी र्ो १९३४ ई० में लातौर से हनकलने वाले साप्ताहिक 'हवश्वबन्ध' में छपी थी।[1]

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

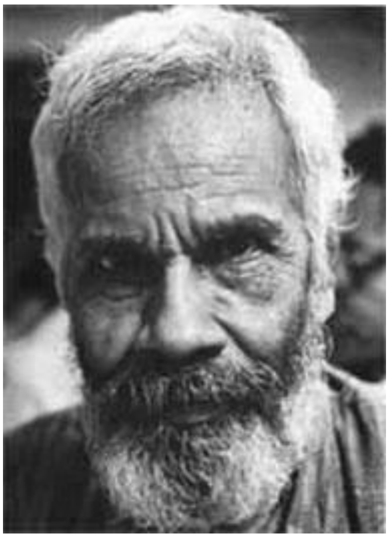

नागार्जुन लगभग अडसठ वर्ष (सन् 1929 से 1997) तक रचनाकर्म से जुड़े रहे। कविता, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत,
निबन्ध, बाल-साहित्य -- सभी विधाओं में उन्होंने कलम चलायी। मैथिली एवं संस्कृत के अतिरिक्त बाङ्ला से भी वे जुड़े रहे।
बाङ्ला
भाषा और साहित्य से नागार्जुन का लगाव शुरू से ही रहा। काशी में रहते हुए उन्होंने अपने छात्र जीवन में बाङ्ला साहित्य को मूल
बाङ्ला में पढ़ना शुरू किया। मौलिक रूप से बाङ्ला लिखना फरवरी 1978 ई० में शुरू किया और सितंबर 1979 ई० तक लगभग
५० कविताएँ लिखी जा चुकी थीं। कुछ रचनाएँ बँगला की पत्र-पत्रिकाओं में भी छपी। कुछ हिंदी की लघु पत्रिकाओं में
लिप्यंतरण और
अनुवाद सहित प्रकाशित हुईं। मौलिक रचना के अतिरिक्त उन्होंने संस्कृत, मैथिली और बाङ्ला से अनुवाद कार्य भी किया।
कालिदास उनके सर्वाधिक प्रिय कवि थे और 'मेघदूत' प्रिय पुस्तक।मेघदूत का मुक्तछंद में अनुवाद उन्होंने १९५३ ई० में किया था।
जयदेव के 'गीत गोविंद' का भावानुवाद वे 1948 ई० में ही कर चुके थे।वस्तुतः १९४४ और १९५४ ई० के बीच नागार्जुन ने अनुवाद का काफी काम किया। बाङ्ला उपन्यासकार शरतचंद्र के कई उपन्यासों और कथाओं का हिंदी अनुवाद छपा भी। कन्हैयालाल
माणिकलाल मुंशी के उपन्यास 'पृथ्वीवल्लभ' का गुजराती से हिंदी में अनुवाद १९४५ ई० में किया था।१९६५ ई० में उन्होंने विद्यापति के
सौ गीतों का भावानुवाद किया था। बाद में विद्यापति के और गीतों का भी उन्होंने अनुवाद किया।इसके अतिरिक्त उन्होंने विद्यापति
की 'पुरुष-परीक्षा' (संस्कृत) की तेरह कहानियों का भी भावानुवाद किया था जो 'विद्यापति की कहानियाँ' नाम से १९६४ ई० में प्रकाशित हुई थी।

विचार-विमर्श

नागार्जुन के काव्य में अब तक की पूरी भारतीय काव्य-परंपरा ही जीवंत रूप में

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

उपलब्धि िि दे खी र् ा सकि ी ि ै। उनक ा कहव-व्यक्तित्व क ाहलद ास और हवद्य ापहि र् ैसे कई क ालर्र् ी कहवर् ों के रचन ा-स ंस ार के गि न अवग ाि न, ब ौद्ध एव ं म ार्क्ुव ाद र् ैसे बहुर् न ोन्मजख

दशुन के व्य ावि ाररक अनगमन ि ि ा सबसे बढ़कर अपने समर् और पररवेश क ी समस्य ाओ, हचि ाओं एव ं स ंघष ों से प्रत्यक्ष र् ड़ाव

ि ि ा लोकस ंस्कृ हि एव ं ल ोकहृदर् क ी गि र ी पि च ान से हनहमुि ि ै। [2]उनक ा ‘र् ात्र ीपन’ भ ारि ीर् म ानस एव ं हवषर्-वस्त क ो समग्र और सच्चे रूप म ें समझने क ा स ाधन रि ा ि ै। म ैहि ल ी, हिन्द ी और सस्कृ ि के अल ाव ा प ाहल, प्र ाकृ ि, ब ांग्ल ा, हस ंि ल ी, हि ब्बि ी आहद अने क ाने क भाष ाओं क ा ज्ञान भ ी उनके हलए इस ी उद्देश्य म ें सि ार् क रि ा ि ै। उनक ा गहिशील, सहिर् और प्रहि बद्ध सद ीघु र् ीवन

उनके क ाव्य म ें र् ीव ंि रूप से प्रहिध्वहनि -प्रहिहब ंहबि ि ै। न ाग ार् न सि ी अि ों म ें भ ारि ीर् हमट्ट ी से बने आधहनकि म कहव ि ैं। उन् ोन

आज ादी के पि ले और ब ाद म ें भ ी कई बडे र् न ांद ोलन ों म ें भाग हलर् ा ि ा। 1939 से 1942 के ब ीच हबि ार म ें हकस ान ो के एक प्रदशुन क ा ने ि ृत्व करने क ी वर् ि से र् ेल म ें रि े। आज ाद ी के ब ाद लम्बे समर् िक व ो पत्रक ाररि ा से भ ी र् डे रि े। र्न स ंघषु म ें अहडग आि ि ा, र् नि ा से गि र ा लग ाव और एक न्य ार्पूणु सम ार् क ा सपन ा, र् े ि ीन गण न ाग ार्जुन के व्यत्यकृतत्व म ें ि ी नि ी,ं उनके स ाहि त्य म ें

भ ी घले-हमले ि ैं। हनर ाल ा के ब ाद न ाग ार् न अके ले ऐसे कहव ि ैं, हर्न् ोने इि ने छ ंद, इि ने ढ ंग, इि न ी श ैहलर् ाँ और इि ने क ाव्य रूप ों का

इस्तेम ाल हकर् ा ि ै। प ार ंपरक क ाव्य रूप ों क ो नए कथ्य के स ाि इस्तेम ाल करने और नए क ाव्य क ौशल ों क ो स ंभव करने व ाले वे

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

अद्वितीय कवि हैं। उनके कुछ काव्य शिल्पों में ताक-झाँक करना हमारे लिए मूल्यवान हो सकता है। उनकी अभिव्यक्ति का ढंग तिर्यक भी है, बेहद ठेठ और सीधा भी। अपनी तिर्यकता में वे जितने बेजोड़ हैं, अपनी वाग्मिता में वे उतने ही विलक्षण हैं। काव्य रूपों को इस्तेमाल करने में उनमें किसी प्रकार की कोई अवरोध नहीं है। उनकी कविता में एक प्रमुख शैली स्वगत में मुक्त बातचीत की शैली है। नागार्जुन की ही कविता से पद उधार लें तो कह सकते हैं-स्वागत शोक में बीज निहित हैं विश्व व्यथा के । भाषा पर बाबा का
गजब अधिकार है। देसी बोली के ठेठ शब्दों से लेकर संस्कृतनिष्ठ शास्त्रीय पदावली तक
उनकी भाषा के अनेकों स्तर हैं। उन्होंने तो
हिन्दी के अलावा मैथिली, बांग्ला और संस्कृत में अलग से बहुत लिखा है। जैसा पहले भाव-बोध के संदर्भ में कहा गया, वैसे ही भाषा की दृष्टि से भी यह कहा जा सकता है कि बाबा की कविताओं में कबीर से लेकर धूमिल तक की पूरी हिन्दी काव्य-परंपरा एक साथ जीवंत है। बाबा ने छंद से भी परहेज नहीं किया, बल्कि उसका अपनी कविताओं में क्रांतिकारी ढंग से इस्तेमाल करके दिखा दिया। बाबा की कविताओं की लोकप्रियता का एक आधार उनके द्वारा किया गया छंदों का सधा हुआ चमत्कारिक प्रयोग भी है।

समकालीन प्रमुख हिंदी साहित्यकार उदय प्रकाश के अनुसार "यह जोर देकर कहने की जरूरत है कि बाबा नागार्जुन बीसवीं सदी की हिंदी कविता के सिर्फ 'भदेस' और मात्र विद्रोही मिजाज के कवि ही नहीं, वे हिंदी जाति के सबसे अद्वितीय मौलिक बौद्धिक कवि
हैं। वे सिर्फ 'एजिट पोएट' नहीं, पारंपरिक भारतीय काव्य परंपरा के विरल 'अभिजात' और 'एलीट पोएट' भी हैं।"उदय प्रकाश ने बाबा नागार्जुन के व्यक्तित्व-निर्माण एवं कृतित्व की व्यापक महत्ता को एक साथ संकेतित करते हुए एक ही महावाक्य में लिखा है कि "खुद
ही विचार करें, जिस कवि ने बौद्ध दर्शन और मार्क्सवाद का गहन अध्ययन किया हो, राहुल सांकृत्यायन और आनंद कौसल्यायन जैसी प्रचंड मेधाओं का साथी रहा हो, जिसने प्राचीन भारतीय चिंतन परंपरा का ज्ञान पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और संस्कृत जैसी भाषाओं में महारत हासिल करके प्राप्त किया हो, जिस कवि ने हिंदी, मैथिली, बंगला और संस्कृत में लगभग एक जैसा वाग्वैदग्ध्य अर्जित किया हो, अपनी मूल प्रज्ञा और संज्ञान में जो तुलसी और कबीर की महान संत परंपरा के निकटतम हो, जिस रचनाकार ने 'बलचनमा' और 'वरुण के बेटे' जैसे उपन्यासों के द्वारा हिंदी में आंचलिक उपन्यास लेखन की नींव रखी हो जिसके चलते हिंदी

क
था
साहित्य को रेणु जैसी ऐतिहासिक प्रतिभा प्राप्त हुई हो, जिस कवि ने अपने आत्यंतिक निजी जीवन ही नहीं बल्कि अपने समूचे दिक् और काल की, राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों और व्यक्तित्व पर अपनी निर्भीक कलम चलाई हो, (संस्कृत में) बीसवीं सदी के किसी आधुनिक राजनैतिक व्यक्तित्व (लेनिन) पर समूचा खण्डकाव्य रच डाला हो, जिसके हैंडलूम के सस्ते झोले में मेघदूत और
'एकॉनॉमिक पॉलिटिकल वीकली' एक साथ रखे मिलते हों, जिसकी अंग्रेजी भी किसी
समकालीन हिंदी कवि या आलोचक से
बेहतर ही रही हो, जिसने रजनी पाम दत्त, नेहरू, ब्रेख्त, निराला, लूशुन से लेकर विनोबा,[3] मोरारजी, जेपी, लोहिया, केन्याटा, एलिजाबेथ, आइजन हावर आदि पर स्मरणीय और अत्यंत लोकप्रिय कविताएं लिखी हों -- ... बीसवीं सदी की

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

हिंदी कहानियों का प्रतिनिधि बोधक कहा है...।"

प्रेमचंद (प्रेमचन्द) के साहित्यिक जीवन का आरंभ (आरम्भ) 1901 से हो चुका था आरंभ (आरम्भ) में वे नवाब राय के नाम से उर्दू में लिखते थे। प्रेमचंद की पहली रचना के संबंध में रामविलास शर्मा लिखते हैं कि-"प्रेमचंद की पहली रचना, जो अप्रकाशित ही रही, शायद उनका वह नाटक था जो उन्होंने अपने मामा जी के प्रेम और उस प्रेम के फलस्वरूप चमारों द्वारा उनकी पिटाई पर लिखा था।

इसका जिक्र उन्होंने 'पहली रचना' नाम के अपने लेख में किया है।"

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

उनका पहला उपलब्ध लेखन उर्दू उपन्यास 'असरारे मआबिद' है जो धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। इसका हिंदी रूपांतरण देवस्थान रहस्य नाम से हुआ। प्रेमचंद का दूसरा उपन्यास 'हमखुर्मा व हमसवाब' है जिसका हिंदी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से १९०७ में प्रकाशित हुआ। १९०८ ई. में उनका पहला कहानी संग्रह सोजे-वतन प्रकाशित हुआ। देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत इस संग्रह को अंग्रेज सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया और इसकी सभी प्रतियाँ जब्त कर लीं और इसके लेखक नवाब राय को भविष्य में लेखन न करने की चेतावनी दी। इसके कारण उन्हें नाम बदलकर प्रेमचंद के नाम से लिखना पड़ा। उनका यह नाम दयानारायन निगम ने रखा था। 'प्रेमचंद' नाम से उनकी पहली कहानी बड़े घर की बेटी जमाना पत्रिका के दिसम्बर १९१० के अंक में प्रकाशित हुई।

१९१५ ई. में उस समय की प्रसिद्ध हिंदी मासिक पत्रिका सरस्वती के दिसम्बर अंक में पहली बार उनकी कहानी सौत नाम से प्रकाशित हुई। १९१८ ई. में उनका पहला हिंदी उपन्यास सेवासदन प्रकाशित हुआ। इसकी अत्यधिक लोकप्रियता ने प्रेमचंद को उर्दू से हिंदी का कथाकार बना दिया। हालाँकि उनकी लगभग सभी रचनाएँ हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती रहीं। उन्होंने लगभग ३०० कहानियाँ तथा डेढ़ दर्जन उपन्यास लिखे।[4]

१९२१ में असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के बाद वे पूरी तरह साहित्य सृजन में लग गए। उन्होंने कुछ महीने मर्यादा नामक पत्रिका का संपादन किया। इसके बाद उन्होंने लगभग छह वर्षों तक हिंदी पत्रिका माधुरी का संपादन किया। १९२२ में उन्होंने बेदखली की समस्या पर आधारित प्रेमाश्रम उपन्यास प्रकाशित किया। १९२५ ई. में उन्होंने रंगभूमि नामक वृहद उपन्यास लिखा, जिसके लिए उन्हें मंगलप्रसाद पारितोषिक भी मिला। १९२६-२७ ई. के दौरान उन्होंने महादेवी वर्मा द्वारा संपादित

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

द

है

हिंदी मासिक पत्रिका चाँद के लिए धारावाहिक उपन्यास के रूप में निर्मला की रचना की। इसके बाद उन्होंने कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि और गोदान की रचना की। उन्होंने १९३० में बनारस से अपना मासिक पत्रिका हंस का प्रकाशन शुरू किया। १९३२ ई. में उन्होंने हिंदी साप्ताहिक पत्र जागरण का प्रकाशन किया। उन्होंने लखनऊ में १९३६ में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने मोहन दयाराम भवनानी की अजंता सिनेटोन कंपनी में कहानी-लेखक की नौकरी भी की। १९३४ में प्रदर्शित फिल्म मजदूर की कहानी उन्होंने ही लिखी थी। १९२०-३६ तक प्रेमचंद लगभग दस या अधिक कहानी प्रतिवर्ष लिखते रहे। मरणोपरांत उनकी कहानियाँ "मानसरोवर" नाम से ८ खंडों में प्रकाशित हुईं। उपन्यास और कहानी के अतिरिक्त वैचारिक निबंध, संपादकीय, पत्र के रूप में भी उनका विपुल लेखन उपलब्ध है।

क्रूर से क्रूर यथार्थ को भी व्यक्त करते हुए वे किसी न किसी रूप में आदर्श की स्थापना कर लेते हैं। उनकी रचनाओं को ध्यान से पढ़ने पर इसके अनेक उदाहरण मिल सकते हैं। 'गोदान' जैसी यथार्थवादी कृति में भी वे यहाँ-वहाँ आदर्शवाद के धरातल पर खड़े

नरर आिे िैं। उल्लेखनीर् िोगा हक िोरी का भाई िीरा ईर्ष्ाु में उसकी गार् को जिर दे देिा िै, हर्सके चलिे िोरी की पूरउपन्यास में दगुहि िोिी िै, लेहकन िब भी उपन्यास के अंहिम हिस्से में िोरी िीरा को क्षमा कर देिा िै।

ऐसे िी, खन्ना और गोहवंदी का प्रसंग भी िै। खन्ना अपनी पत्नी गोहवंदी की उपेक्षा करिा िै, लेहकन हमल में आग लगने के बाद र्ब वि संकट में पड र्ािा िै, िो उसका हृदर्-पररविुन िो उठिा िै। वो गोहवंदी के पैरों में हगर पडिा और वो उसकी गलहिर्ों को भूलकर उसे सिारा देिी िै। वो कििी िै, "सत्पुरुष धन के आगे हसर निीं झकािे। वि देखिे िैं, िम क्या िो, अगर िममें सच्चाई िै, न्यार् िै, त्याग िै, पुरुषाथु िै, िो वे िमारी पूर्ा करेंगे।" इन दोनों िी प्रसंगों में प्रेमचंद ने अपना अहिि करने वाले को भी क्षमा कर देने के आदशु का िी प्रहिपादन हकर्ा िै। [5]

'गोदान' की िी िरि प्रेमचंद की और कई रचनाओं में र्थाथु की पथरीली भूहम पर भी आदशु के पष्प हखले हदख र्ािे िैं। लेहकन र्िाँ िम प्रेमचंद की कहानी 'कफ़न' का उल्लेख करेंगे क्योंहक र्ि वो कहानी िै, हर्समें उन्होंने र्थाथु को उसके क्रूर रिम रूप में प्रस्तुि हकर्ा िै। कहानी के दोनों प्रमख पात्र चूंहक दहलि िैं, इसहलए इस कहानी के आधार पर उन्हें दहलि-हवरोधी हसद्ध करने की आलोचकीर् कचेष्टाएं भी साहित्य में हुई िैं, लेहकन ऐसे प्रर्ासों को कोई हवशेष मित्व निीं हमला। 'कफन' कहानी को हिंदी की पिली 'नर्ी कहानी' भी माना गर्ा िै। बहुधा हवद्वानों का र्ि भी मि िै हक इसमें प्रेमचंद ने आदशु की राि निीं पकडी िै। लेहकन इस कहानी को र्ेद बारीकी से देखें िो स्पष्ट िोिा िै हक इस चरम र्थाथु की कथा में भी प्रेमचंद आदशु की संभावना िलाशने में निीं चूके िैं।

कहानी में र्ब बुहधर्ा की मृत्यु िो र्ािी िै, िो घीसू उसके हिर्ाकमु के हलए र्मीदार से लेकर गाँव के बहनर्ा-मिार्नों िक से माँगनी करने पहुँच र्ािा िै। र्मीदार उसे बुरा मानिे हुए भी पैसे दे देिे िैं बाकी र्गिों से भी पैसे हमल र्ािे िैं अनार्-लकडी भी हमल र्ािी िै। गाँव के लोग अथी के हलए बाँस इत्याहद काटने में लग र्ािे िैं। इन घटनाओं से र्ि स्पष्ट िोिा िै हक बुरे से बुरे व्यहक्त पर भी र्ब दुःख पडिा िै, िो समार् उसे संभाल लेिा िै। र्ि बाि कफ़न के पैसों से पूहडर्ाँ खा रिे घीसू-माधव की बािचीि में और बेििर ढंग से स्पष्ट िोिी िै।

माधव कििा िै, "र्ब बुहधर्ा मरने पर िमसे पूछेगी हक िमने मझे कफन क्यों निीं हदर्ा िो क्या किेंगे ?"

इसपर घीसू र्वाब देिा िै, "िूम कैसे र्ानिा िै हक उसे कफ़न न हमलेगा?... उसको कफ़न हमलेगा और बहुि अच्छा हमलेगा!... विी लोग देंगे, हर्न्होंने अबकी हदर्ा।" र्िाँ घीसू का इशारा समार् की िरफ िी िै वस्तुिः र्थाथु की इस क्रूर कथा में भी प्रमचंदे ने

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

समाज को मानवीयता का एक सुंदर आदर्श गढ़ दिया है और निहित रूप से यह आदर्श खोखला नहीं है।

सारांश यह है कि प्रेमचंद यदि एक ही साथ बौद्धिक वर्ग और सामान्य जनमानस दोनों के बीच लोकप्रिय हैं, तो इसका कारण उनकी रचनाओं की सहज भाषा और आमजन से जुड़े विषयों के साथ-साथ यथार्थ में आदर्श की संभावना का संधान कर लेना भी है।

परिणाम

नागार्जुन मार्क्सवाद से बहुत गहरे प्रभावित रहे, लेकिन मार्क्सवाद के तमाम रूप और रंग देखकर वह दुखी हैं। वह पूछते हैं कौन से मार्क्सवाद की बात कर रहे हो, मार्क्स या चारु मजूमदार या चे ग्वेरा की? इसी तरह उन्होंने जयप्रकाश नारायण का समर्थन जरूर किया, लेकिन जब जनता पार्टी विफल रही तो बाबा ने जयप्रकाश को भी नहीं छोड़ा-

खिचड़ी विप्लव देखा
हमने भोगा
हमने क्रांति
विलास अब भी खत्म
नहीं होगा
क्या पूर्ण क्रांति
का भ्रांति विलास।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

थे। हथियारों में उनका ज़बरदस्त विश्वास था इसीलिए वह जयप्रकाश की अहिंसक क्रांति से लेकर नक्सलियों की सशस्त्र क्रांति तक का समर्थन करते थे-

काम नहीं है, दाम नहीं है
तरुणों को उठाने दो बंदूक
फिर करवा लेना आत्मसमपुण

लेकिन इसके लिए उनकी आलोचना भी होती थी कि बाबा की कोई विचारधारा ही नहीं है, बाबा कहीं टिकते ही नहीं हैं। नागार्जुन का मानना था कि वह जनवादी हैं। जो जनता के हित में है वही मेरा बयान है। मैं किसी विचारधारा का समर्थन करने के लिए पैदा नहीं हुआ हूं। मैं गरीब, मजदूर, किसान की बात करने के लिए ही हूं। उन्होंने गरीब को गरीब ही माना, उसे किसी जाति या वर्ग में विभाजित नहीं किया। तमाम आर्थिक अभावों के बावजूद उन्होंने विशद लेखन कार्य किया।[6]

आजादी के पहले से लेकर अपनी जिन्दगी की आखिरी सांस तक जनता के साथ कंधा भिडाकर लडने-भिडने, उससे सीखने और उसे सिखाने की जिद हरदम नागार्जुन के कविता के होड में है। सत्ता के खिलाफ़ खडा होना, समकालीन आलोचकों की कुटिल भृकुटि- भंगिमा से मोर्चा लेना और साहित्य की पवित्र भूमि से बर्खास्तगी, यही तो मिलता है जनकवि को। पर यकीनन, उसे जनता का प्यार मिलता है। दिल्ली की बसों के चिढ़े-खिझलाए ड्राइवरों से लेकर बिहार के धधकते खेत-खलिहानों के खेत-मजदूर तक उसे सर- आँखों पर रखते हैं। अब सवाल बचा लोकप्रियतावाद का। लोकप्रिय होना किसी कवि की कमजोरी नहीं, उसकी मजबूती है, अगर वह लोकप्रियता के लिए अपने ईमान का सौदा नहीं करता। अगर वह सत्य, जनता और अपने आप से दगाबाजी नहीं करता। नागार्जुन ने लोकप्रिय होने के लिए कोई समझौता नहीं किया। जब-जब उन्हें लगा कि जनता बदलाव के अपने रास्ते पर है, वे उसके साथ रहे- सीखते-सिखाते। 'जन-आन्दोलनों का इतिहास' नाम की किताब अगर आप लिखने की सोचें तो एकबार नागार्जुन के काव्य-संसार की ओर पलट कर देख लें। तेभागा-तेलंगाना से लेकर जे.पी. की सम्पूर्ण क्रान्ति तक और भगतसिंह से लेकर भोजपुर
तक आप जहाँ तक जाएंगे, और पाएंगे कितने ही स्थानीय प्रतिरोध, जिनको इतिहास की मुख्यधारा हमेशा ही भुला देती है। पर यह
कोई अंध आन्दोलन भक्ति का सबब नहीं। आन्दोलनों का टूटना-बिखरना, उनकी कमी-कमजोरी, सब अपनी सम्पूर्णता में यहां
मौजूद है। जे.पी. आन्दोलन पर क्रमशः लिखी कविताएँ इसकी गवाही हैं- 'क्रान्ति सुगबुगाई है' से 'खिचडी विप्लव देखा हमने' तक। सिर्फ कवि ही आंदोलनों पर प्रभाव नहीं डालते, आन्दोलन भी उन पर असर छोडते हैं। केदार, त्रिलोचन और नागार्जुन, जो कि खेती-किसानी की जिन्दगी के कवि हैं, कविताओं वे पहले से ही लिख रहे थे पर सुधीजनों की नजर उन पर तब पडी जब नक्सल आन्दोलन ने जमीन के सवाल को राजनीति के केंद्र में स्थापित कर दिया। सो कविता और जनांदोलन का यह गहरा द्वंद्वात्मक संबंध
गौरतलब है। जन-इतिहास की बातें जन-इतिहास से रूबरू होंगी
बहुत इतिहासकारों ने की, संक्षिप्ततम

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

लिखा भी पर नागार्जुन के शानदार कलम के माफ़िक है भारत के

पाँच पूत भारतमाता के, दुश्मन था खूँखार
गोली खाकर एक मर गया, बाकी बच गए
चार चार पूत भारतमाता
के, चारों चतुर-प्रवीन
देश निकाला मिला एक को, बाकी बच गए तीन
तीन पूत भारतमाता के,
लड़ने लग गए वो अलग हो गया उधर
एक, अब बाकी बच गए दो दो बेटे
भारतमाता के, छोड़ पुरानी
टेक
चिपक गया एक गद्दी से, बाकी बच
गया एक एक पूत
भारतमाता का, कंधे पर
है झंडा
पुलिस पकड़ कर जेल ले गई, बाकी बच गया अंडा !

बचपन की संख्याओं और गिनतियों के सम्मोहक संसार से वाबस्ता कराती यह कविता कौतूहल और रहस्य के हमारे आदिम मनोभाव से खेलती है, उसी को अपनी जमीन के तौर इस्तेमाल करती है। यह खासा मुश्किल काम है किसी कवि के लिए कि वि

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

लगभग प्रतीक में बदल गए रूप का इस्तेमाल नए कथ्य के लिए करते। ज्यों रूप का पारंपरिक अर्थ नए अर्थ पर भारी पड़ सकता है और कविता आंतरिक असंगति से गड़बड़ा सकती है। पर ज्यों ही कविताओं को लाभ भी है। बचपन की लय और तुक में जन-इतिहास भरने की दिलचस्प ललक में नागार्जुन ज्यों हाजिर हैं। इस लय में मौजूद कुतूहल और हास्य का इस्तेमाल करते और उससे आधुनिक इतिहास की समीक्षा के लिए बरतते हुए। कविता भारतमाता के पांच बलिदानी, लड़ाकू सपूतों के संघर्ष से शुरू होती है। पहले दोनों को क्रमशः हत्या और देश निकाला मिलता है। आजादी के लिए लड़ी पुरानी पीढ़ी को नागार्जुन अपनी इस कविता में गौरव से याद करते हैं। भगतसिंह जैसे ढेरों भारतमाता के बेटों को खूंखार दुश्मन के खिलाफ लड़ने के लिए फाँसी और गोली मिली। लेकिन जो बाकी बचे, उनको तो उस शताब्दी का आधार बना हुआ मिला। उन्होंने क्या किया? नागार्जुन ने सीधे देश के विभाजन पर कुछ नहीं लिखा।[7] क्यों नहीं लिखा, इस विषय पर विद्वानों के ढेरों कयास हैं। पर इस कविता की आंतरिक संगति को समझते हुए उस बेटे के बारे में, जो उधर अलग हो गया, पर बार-बार ख्याल अटकता है। क्या यह विभाजन के अलावा और कुछ है? क्या अलग होना और देश निकाला जैसी घटनाओं को विभाजन के दर्द से जोड़ा जा सकता है

'युगधारा', 'खिचड़ी', 'विप्लव देखा हमने', 'पत्रहीन नग्न गाछ', 'प्यासी पथराई आँखें', 'इस गुब्बारे की छाया में', 'सतरंगे पंखोंवाली', 'मैं मिलिटरी का बूढ़ा घोड़ा' जैसी रचनाओं से आम जनता में चेतना फैलाने वाले नागार्जुन के साहित्य पर विमर्श का सारांश था कि बाबा नागार्जुन जनकवि हैं और वे अपनी कविताओं में आम लोगों के दर्द को बयाँ करते हैं। विचारक हॉब्सबाम ने **इस सदी को अतिवाद की सदी** कहा है। उन्होंने कहा कि नागार्जुन का व्यक्तित्व बीसवीं शताब्दी की तमाम महत्वपूर्ण घटनाओं से निर्मित हुआ था। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से शोषणमुक्त समाज या यों कहें कि समतामूलक समाज निर्माण के लिए प्रयासरत थे। उनकी विचारधारा यथार्थ जीवन के अंतर्विरोधों को समझने में मदद करती है। वर्ष 1911 इसलिए महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि उसी वर्ष शमशेर बहादुर सिंह, केदारनाथ अग्रवाल, फैज एवं नागार्जुन पैदा हुए। उनके संघर्ष, क्रियाकलापों और उपलब्धियों के कारण बीसवीं सदी महत्वपूर्ण बनी। इन्होंने गरीबों के बारे में, जन्म देने वाली माँ के बारे में, मजदूरों के बारे में लिखा। लोकभाषा के विराट उत्सव में वे गए और काव्य भाषा अर्जित की। लोकभाषा के संपर्क में रहने के कारण इनकी कविताएँ औरों से अलग हैं। सुप्रसिद्ध कवि आलोक धन्वा ने नागार्जुन की रचनाओं को संदर्भित करते हुए कहा कि उनकी कविताओं में आजादी की लड़ाई की अंतर्वस्तु शामिल है। नागार्जुन ने कविताओं के जरिए कई लड़ाइयाँ लड़ीं। वे एक कवि के रूप में ही महत्वपूर्ण नहीं हैं अपितु **नए भारत के निर्माता** के रूप में दिखाई देते हैं।[8]

निष्कर्ष

प्र◌ेमच◌ंद स◌ादा एव◌ं सरल र◌्◌ीवन के म◌ाहलक प्र◌ेमचन्द सद◌ा मस्त र ि◌ि◌े ि◌े। उनके र◌्◌ीवन म◌े◌ं हवषमि◌◌ाओ◌ं और कटि◌◌ाओ◌ं स◌े वि लग◌ाि◌ार

ख◌ेलि◌े रि◌े। इस ख◌ेल क◌ो उन◌्◌ोन◌े ब◌ाज◌ी म◌ान हलर◌्◌ा हर◌्सक◌ो ि◌मश◌े र◌्◌ीि◌न◌ा च◌ाि◌ि◌े ि◌े। कि◌◌ा र◌्◌ाि◌◌ा ि◌ै हक प्रमचन्दे ि◌स◌ोडंप्रकृ हि के

म◌ाहलक ि◌े। हवषमि◌◌ाओ◌ं भर◌े र◌्◌ीवन म◌े◌ं ि◌◌ंस◌ोड ि◌◌ोन◌ा एक बि◌◌ादर क◌ा क◌ाम ि◌ै। इसस◌े इस ब◌ाि◌ क◌ो भ◌ी समझ◌ा र◌्◌ा सकि◌◌ा ि◌ै हक वि अप◌ूव◌ु र◌्◌ीवन◌ी-शहक्त क◌ा द्◌्◌ोि◌क ि◌े। सरलि◌◌ा, स◌ौर◌्न्य और उद◌ारि◌◌ा क◌ी वि म◌ूहि◌ु ि◌े। र◌्ि◌◌ाँ उनके ह◌्दर◌् म◌े◌ं हमत्र◌ो◌ं के हलए उद◌ार भाव ि◌◌ा वि◌◌ी◌ं उनके ह◌्दर◌् म◌े◌ं ग◌्र◌ीब◌ो◌ं एव◌ं प◌ीहडि◌◌ो◌ं के हलए सि◌◌ानभ◌ूहि क◌ा अि◌◌ाि◌ स◌ागर ि◌◌ा। प्र◌ेमचन्द उच्चक◌ोहट के म◌ानव ि◌े। इनक◌ो ग◌ाँव र◌्◌ीवन स◌े अच्छ◌ा प्र◌ेम ि◌◌ा। वि सद◌ा स◌ाध◌ारण ग◌ंवई हलब◌ास म◌े◌ं रि◌ि◌े ि◌े। र◌्◌ीवन क◌ा अहधक◌ा◌ंश भाग उन◌्◌ोन◌े ग◌ाँव म◌े◌ं ि◌◌ी गज◌ार ◌ा। ब◌ाि◌र स◌े हब ि◌ल

स◌ाध◌ारण हदखन◌े व◌ाल◌े प्र◌ेमचन्द अन्दर स◌े र◌्◌ीवन◌ी-शहक्त के म◌ाहलक ि◌े। अन्दर स◌े र◌्र◌ा स◌ा भ◌ी हकस◌ी न◌े द◌ेख◌ा ि◌◌ो उस◌े प्रभाहवि ि◌◌ोन◌ा ि◌◌ी ि◌◌ा। वि आडम्बर एव◌ं हदख◌ाव◌ा स◌े म◌ील◌ो◌ं द◌ूर रि◌ि◌े ि◌े। र◌्◌ीवन म◌े◌ं न ि◌◌ो उनक◌ो हवल◌ास हमल◌ा और न ि◌◌ी उनक◌ो इसक◌ी ि◌मन्न◌ा ि◌◌ी। ि◌म◌ाम मि◌◌ापर◌ुष◌ो◌ं क◌ी ि◌रि अपन◌ा क◌ाम स्वर◌्◌ं करन◌ा पस◌ंद करि◌े ि◌े। प्र◌ेमचन्द क◌ी रचन◌ा-दृहष्ट, हवहभन्न स◌ाहि◌त्य रूप◌ो◌ं म◌े◌ं, अहभव्यक्त ह◌ुई। वि बह◌ुमख◌ी प्रहि◌भा स◌ंपन्न स◌ाहि◌त्यक◌ार ि◌े। प्र◌ेमच◌ंद क◌ी रचन◌ाओ◌ं म◌े◌ं ि◌त्क◌ाल◌ीन इहि◌ि◌◌ास ब◌ोलि◌◌ा ि◌ै। उन◌्◌ोन◌े अपन◌ी रचन◌ाओ◌ं म◌े◌ं र◌्न

स◌ाध◌ारण क◌ी भ◌ावन◌ाओ, पररहि◌ि◌र◌्◌ो◌ं और उनक◌ी समस्◌्◌ाओ◌ं क◌ा म◌ाहमक◌ु हचत्रण हकर◌्◌ा। उनक◌ी कृ हि◌र◌्◌ाँ भ◌ारि के सव◌ाु◌हधक हवश◌ाल और हवस्त◌ृि वग◌ु क◌ी कृ हि◌र◌्◌ाँ ि◌ै◌ं। अपन◌ी कि◌◌ाहनर◌्◌ो◌ं स◌े प्र◌ेमच◌ंद म◌ानव-स्वभाव क◌ी आध◌ारभ◌ूि मि◌त्◌ा पर बल द◌ेि◌े ि◌ै◌ं। **'बड◌े घर की ब◌ेट◌ी,' आनन्द◌ी, अि◌न◌े द◌ेवर स◌े अप्रसन्न हुई, क◌्◌्◌ंपक वि गव◌ार उसस◌े ककु शत◌ा स◌े ब लत◌ा ि◌ै और उस ि◌र ख◌ीचकर खड◌ाऊ फ◌े◌ं कत◌ा ि◌ै। र◌्ब उस◌े अनभव ि◌ त◌ा ि◌ै पक उनका ि◌ररव◌ार ट◌ूट रि◌◌ा ि◌ै और उसका द◌ेवर ि◌ररत◌ाि◌ स◌े भर◌ा ि◌ै, तब वि उस◌े क्षमा कर द◌ेत◌ी ि◌ै और अि◌न◌े ि◌पत क श◌ात करत◌ी ि◌ै।** प्र◌ेमच◌ंद न◌े अपन◌े र◌्◌ीवन-क◌ाल म◌े◌ं ि◌◌ज◌ार◌ो◌ं पत्र हलख◌े ि◌◌ोंग◌े, लहकन◌े उनक◌े र◌्◌ो पत्र क◌ाल

क◌ा ग्र◌ास बनन◌े स◌े बच◌े रि गए और र◌्◌ो सम्प्रहि उपलब्ध ि◌ै◌ं, उनम◌े◌ं सव◌ाु◌हधक पत्र व◌े ि◌ै◌ं [9] र◌्◌ो उन◌्◌ोन◌े अपन◌े क◌ाल की

ल◌ोकहप्रर◌् उद◌ूु म◌ाहसक पहत्रक◌ा 'जम◌ान◌ा' के र◌्शस्व◌ी सम्प◌ादक मंश◌ी दर◌्◌ान◌ार◌ार्ण हनगम क◌ो हलख◌े ि◌े। र◌्◌ो◌ं ि◌◌ो मश◌ी दर◌्◌ान◌ार◌ार्ण हनगम प्र◌ेमच◌ंद स◌े द◌ो वष◌ु छ◌ोट◌े ि◌े ल◌ेहकन प्र◌ेमच◌ंद उनक◌ो सद◌ा बड◌े भाई र◌्◌ैस◌ा सम्मान द◌ेि◌े रि◌े। इन द◌ोन◌ो◌ं हवभ◌ूहि◌र◌्◌ो◌ं के प◌ारस्पररक सम्बन्ध◌ो◌ं को

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 5, Issue 12, December 2016

परिभाषित करना भी अत्यंत दुष्कर कार्य है, लेकिन प्रेमचंद के इस आदर भाव का कारण यह प्रतीत होता है कि प्रेमचंद को साहित्यिक संसार में पहचान दिलाने का महनीय कार्य निगम साहब ने उनको 'जमाना' में निरंतर प्रकाशित करके भी सम्पादित किया था, और उस काल की पत्रिकाओं में भी यहाँ तक प्रकाशित हुआ कि प्रेमचंद को प्रेमचंद बनाने का श्रेय यदि किसी को है तो मुंशी दयानारायण निगम को ही है।[10]

संदर्भ

1. नागार्जुन (हिंदी) काव्यांचल। अभिगमन तिथि: 31 जनवरी, 2013।
2. ↑ नागार्जुन/परिचय (हिंदी) गद्यकोश। अभिगमन तिथि: 31 जनवरी, 2013।
3. ↑ नागार्जुन की कविताएं (हिंदी) जागरण जंक्शन। अभिगमन तिथि: 1 जुलाई, 2013।
4. ↑ मृत्युंजय। शताब्दी स्मरण : नागार्जुन (हिंदी) शब्द (ब्लॉग)। अभिगमन तिथि: 25 जनवरी, 2015।
5. ↑ साहित्य अकादमी पुरस्कृत
6. ↑ नागार्जुन की जन्मशती पर समारोह संपन्न (हिंदी) वेबदुनिया हिंदी। अभिगमन तिथि: 31 जनवरी, 2013।
7. गुप्त, प्रकाशचन्द्र (1984) प्रेमचंद भारतीय साहित्य के निर्माता। नई दिल्ली: साहित्य अकादमी।
8. ↑ प्रेमचन्द : जीवन परिचय (हिन्दी) (एच.टी.एम.एल)। । अभिगमन तिथि: 9 नवंबर, 2010।
9. ↑ जैन, प्रदीप। प्रेमचंद के पत्र (हिंदी) हिंदी समय। अभिगमन तिथि: 22 मार्च, 2013।
10. ↑ हमारे साहित्यकार - प्रेमचंद (हिन्दी) (एच.टी.एम.एल) बाल जगत हिन्दी। अभिगमन तिथि: 14 अक्टूबर, 2010।